(११) पद

रहम नजर करो, अब मोरे साईं,
तुमबिन नहीं मुझे मां–बापभाई ।। ध्रु० ।।

मैं अंधा हूं बंदा तुम्हारा ।
मैं ना जानूं, अल्लाइलाही ।। रहम० ।। १ ।।

खाली जमाना मैंने गमाया ।
साथी आखिरी तू और न कोई ।। रहम० ।। २ ।।

अपने मशीद का झाडू गनू है ।
मालिक हमारे, तुम बाबा साईं ।। रहम० ।। ३ ।।